मखाना आधारित उद्यमिता से महिला सशक्तिकरण

रवि प्रकाश[1], प्रियंका चौधरी[2], निर्मल पाण्डेय[3] और **प्रीति उपाध्याय[4]**

“ बिहार में मखाना उत्पादन पारंपरिक आर्द्रभूमि कृषि से आगे बढ़कर एक उच्च मूल्य वाले बाजारोन्मुख उद्यम के रूप में विकसित हुआ है, जिससे ग्रामीण महिलाओं की भूमिका लगातार मजबूत हुई है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से संगठित महिलाएं मखाना की खेती, प्रसंस्करण और विपणन से जुड़कर आय, आत्मनिर्भरता और सामाजिक सशक्तिकरण की नई पहचान बना रही हैं। राज्य की आजीविका पहल ‘जीविका’ ने महिलाओं को वित्तीय समावेशन, सामूहिक संगठन और कौशल विकास का प्रभावी मंच प्रदान किया है, जिससे मखाना आधारित सूक्ष्म उद्यमों की संभावनाएं और अधिक सुदृढ़ हुई हैं। वर्तमान में महिलाएं उत्पादन के साथ-साथ मूल्य संवर्धन और विपणन गतिविधियों में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। यह लेख बिहार में महिलाओं द्वारा संचालित मखाना उद्यमिता की संभावनाओं, संस्थागत सहयोग, चुनौतियों तथा भविष्य की रणनीतियों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वर्ष 2026 के अंतर्राष्ट्रीय महिला किसान वर्ष के संदर्भ में यह क्षेत्र लैंगिक समानता, पोषण सुरक्षा और सतत ग्रामीण विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ”

हाल के वर्षों में स्वास्थ्य सचेत जीवनशैली और पौष्टिक खाद्य उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण मखाना की लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है। शहरी बाजारों और निर्यात क्षेत्र में इसे कम वसा, उच्च प्रोटीन और पौष्टिक नाश्ते के रूप में पहचान मिली है। इसके परिणामस्वरूप मखाना अब पारंपरिक फसल से आगे बढ़कर एक उच्च मूल्य कृषि उत्पाद के रूप में उभरा है। इस बदलाव ने प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, ब्रांडिंग और संगठित विपणन की नई संभावनाएं उत्पन्न की हैं।

इसी परिवर्तित परिदृश्य में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण बनकर सामने आई है। बिहार में स्वयं सहायता समूहों के विस्तार ने महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त करने में बड़ी भूमिका निभाई है। ‘जीविका’ के माध्यम से महिलाओं को बचत, बैंक लिंकेज, आंतरिक ऋण, कौशल विकास और सामूहिक निर्णय-निर्माण का मजबूत मंच प्राप्त हुआ है। आज लाखों महिलाएं स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर संगठित आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रही हैं।

यह संस्थागत ढांचा मखाना आधारित उद्यमिता को नई दिशा देने में सक्षम है। महिलाएं उत्पादन, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन जैसी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाकर आय वृद्धि और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही हैं। साथ ही, समूह आधारित व्यवस्था ने उनमें

[1]पशु चिकित्सक; [2]बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी; [3]भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली; [4]शाकीय विज्ञान संभाग, भाकृअनुप-भाकृअनुसं, नई दिल्ली

जोखिम साझेदारी, उद्यम प्रबंधन और सामूहिक विपणन की क्षमता भी विकसित की है।

हालांकि, प्रसंस्करण अवसंरचना, पर्याप्त पूंजी, तकनीकी प्रशिक्षण और बाजार संपर्क जैसी चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं, फिर भी बिहार का स्वयं सहायता समूह मॉडल महिला आधारित मखाना उद्यमिता को संगठित, विस्तार योग्य और स्थायी स्वरूप प्रदान करने की मजबूत क्षमता रखता है।

महिला उद्यमिता

मखाना आधारित उद्यमिता ग्रामीण महिलाओं के लिए आय विविधीकरण और स्थायी आजीविका का प्रभावी माध्यम बनकर उभरी है। कच्चे मखाना की तुलना में प्रसंस्करित, ग्रेडेड और पैकेट बंद उत्पादों से अधिक मूल्य प्राप्त होता है, जिससे आय और लाभ दोनों में वृद्धि संभव होती है। जब स्वयं सहायता समूह सामूहिक रूप से प्रसंस्करण, पॉपिंग, पैकेजिंग और विपणन गतिविधियों से जुड़ते हैं, तो वे लागत कम करने, बेहतर बाजार मूल्य प्राप्त करने और जोखिम साझा करने में सक्षम होते हैं। इससे परिवार की आय में स्थिरता आती है और महिलाओं की आर्थिक भागीदारी मजबूत होती है।

आर्थिक लाभों के साथ-साथ इसका सामाजिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के बाद महिलाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और निर्णय निर्माण में भागीदारी बढ़ी है। कई क्षेत्रों में महिलाओं ने ऋण लेकर छोटे उद्यम शुरू किए, जिससे

महिलाओं के हाथों सशक्त होता मखाना क्षेत्र

घरेलू और सामाजिक स्तर पर उनकी भूमिका अधिक सशक्त हुई। आज वे बैंकिंग संस्थानों से संवाद, बाजार संपर्क, सरकारी योजनाओं की जानकारी तथा सामुदायिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं।

इस प्रकार मखाना आधारित महिला उद्यमिता केवल आय बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक सशक्तिकरण, लैंगिक समानता और ग्रामीण परिवर्तन की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

प्रशिक्षण, कौशल और संस्थागत सहयोग

मखाना क्षेत्र में बढ़ती घरेलू और निर्यात मांग के साथ गुणवत्ता, स्वच्छता और मानकीकरण का महत्व भी बढ़ा है। पारंपरिक ज्ञान इस क्षेत्र की आधारशिला है, किंतु बाजारोन्मुख उद्यमिता के लिए वैज्ञानिक प्रसंस्करण तकनीकों, नमी नियंत्रण, ग्रेडिंग और सुरक्षित भंडारण का ज्ञान आवश्यक हो गया है। इसके साथ ही महिलाओं को लेखांकन, लागत-लाभ विश्लेषण, व्यवसाय योजना, मूल्य निर्धारण और डिजिटल विपणन जैसे प्रबंधकीय कौशलों का प्रशिक्षण देना भी महत्वपूर्ण है, ताकि वे केवल उत्पादक नहीं बल्कि सफल उद्यमी के रूप में विकसित हो सकें।

'जीविका' जैसे संस्थागत मंच इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इनके माध्यम से प्रशिक्षण, बैंक लिंकेज और तकनीकी मार्गदर्शन को एकीकृत किया जा सकता है। सामूहिक प्रसंस्करण केंद्रों की स्थापना से उपकरणों की साझा उपलब्धता, गुणवत्ता नियंत्रण और लागत में कमी सुनिश्चित हो सकती है। विशेषज्ञों के नियमित मार्गदर्शन से उत्पाद की एकरूपता, ब्रांड विश्वसनीयता और बाजार प्रतिस्पर्धा में भी सुधार संभव है।

सामूहिक विपणन और बाजार नीति

मखाना एक उच्च मूल्य वाला कृषि उत्पाद है, जिसकी कीमतें मांग, गुणवत्ता और मौसमी उपलब्धता के अनुसार बदलती रहती हैं। व्यक्तिगत स्तर पर बिक्री करने वाली महिलाओं को अक्सर बिचौलियों पर निर्भर रहना पड़ता है, जिससे उन्हें उचित बाजार मूल्य नहीं मिल पाता। सीमित उत्पादन, भंडारण सुविधा की कमी और बाजार जानकारी के अभाव से उनकी मोलभाव क्षमता भी कमजोर रहती है।

संभावनाएं

बिहार, देश के कुल मखाना उत्पादन में लगभग 80 प्रतिशत से अधिक योगदान देता है। मधुबनी, दरभंगा, कटिहार और पूर्णिया जैसे जिले इसके प्रमुख उत्पादन केंद्र हैं। मखाना जलभराव वाले खेतों, तालाबों और आर्द्र मृदा में उगाई जाने वाली विशिष्ट फसल है, जो स्थानीय पारिस्थितिकी तथा पारंपरिक ज्ञान पर आधारित है। इसकी खेती और प्रसंस्करण दोनों ही श्रम प्रधान गतिविधियां हैं। बीज संग्रहण, सुखाने, भूनने और पॉपिंग जैसी प्रक्रियाएं अत्यंत कौशलयुक्त और समय साध्य होती हैं, जिससे यह ग्रामीण रोजगार सृजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण फसल बन जाती है। मखाना की मूल्य श्रृंखला बहुस्तरीय है, जिसमें तालाब प्रबंधन, बीज संग्रहण, प्राथमिक प्रसंस्करण, पॉपिंग, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और विपणन जैसे कई चरण शामिल हैं। पारंपरिक रूप से इसमें मल्लाह समुदाय की प्रमुख भूमिका रही है, किंतु हाल के वर्षों में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की भागीदारी भी तेजी से बढ़ी है। विशेष रूप से प्रसंस्करण, ग्रेडिंग, पैकेजिंग और मूल्य संवर्धित उत्पादों के निर्माण में महिलाएं सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। यदि स्वयं सहायता समूह सामूहिक प्रसंस्करण केंद्र स्थापित करें, गुणवत्ता मानकों को अपनाएं और बाजार से प्रत्यक्ष संपर्क विकसित करें, तो वे केवल कच्चा उत्पाद बेचने तक सीमित न रहकर ब्रांडेड और मूल्य संवर्धित उत्पादों के माध्यम से अधिक लाभ अर्जित कर सकती हैं। बढ़ती शहरी और निर्यात मांग को देखते हुए मखाना क्षेत्र महिला उद्यमिता और ग्रामीण आर्थिक सशक्तिकरण के लिए अत्यंत संभावनाशील बनकर उभर रहा है।

अवसर

बिहार में मखाना आधारित महिला उद्यमिता की संभावनाएं व्यापक हैं, लेकिन प्रसंस्करण, भंडारण, कार्यशील पूंजी और गुणवत्ता मानकीकरण जैसी चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं। सीमित अवसंरचना और छोटे ऋण आकार के कारण आधुनिक उपकरणों तथा प्रसंस्करण इकाइयों में पर्याप्त निवेश कठिन हो जाता है। साथ ही, सामाजिक-आर्थिक असमानताएं और संसाधनों तक असमान पहुंच भी महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करती हैं। ऐसे समय में वर्ष 2026, जिसे अंतर्राष्ट्रीय महिला किसान वर्ष के रूप में देखा जा रहा है, महिला केंद्रित कृषि उद्यमिता को नई पहचान देने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। यदि मखाना क्षेत्र में सक्रिय महिलाओं को लक्षित प्रशिक्षण, अनुकूल ऋण, बेहतर अवसंरचना और संगठित बाजार समर्थन उपलब्ध करवाया जाए, तो यह क्षेत्र सतत आजीविका, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण आर्थिक विकास का प्रभावी मॉडल बन सकता है।

ऐसी स्थिति में स्वयं सहायता समूह आधारित सामूहिक विपणन मॉडल प्रभावी समाधान प्रदान कर सकता है। जब समूह स्तर पर उत्पाद एकत्रित कर संगठित बिक्री की जाती है, तो थोक खरीदारों और खुदरा बाजारों से सीधे जुड़ने की संभावना बढ़ती है। सामूहिक ब्रांडिंग, मानकीकृत पैकेजिंग और गुणवत्ता नियंत्रण से उत्पाद की विश्वसनीयता मजबूत होती है तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से नए बाजारों तक पहुंच संभव हो पाती है।

सामूहिक विपणन जोखिम साझेदारी को भी बढ़ावा देता है। कीमतों में उतार-चढ़ाव

मखाना प्रसंस्करण क्षेत्र में भरपूर संभावनाएं

या मांग में कमी जैसी परिस्थितियों में समूह स्तर पर निर्णय लेकर नुकसान को कम किया जा सकता है। इस प्रकार संगठित विपणन व्यवस्था महिलाओं की आय वृद्धि, बाजार पारदर्शिता और मखाना उद्यम की स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

एकीकरण और नीतिगत समर्थन

मखाना क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को स्थायी रूप से सशक्त बनाने के लिए बाजार एकीकरण और प्रभावी नीतिगत समर्थन अत्यंत आवश्यक है। महिलाओं की भागीदारी केवल उत्पादन और प्रसंस्करण तक सीमित न रहकर विपणन, मूल्य निर्धारण और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन तक विस्तारित होनी चाहिए। इसके लिए महिला स्वयं सहायता समूहों को किसान उत्पादक संगठनों से जोड़ना, डिजिटल विपणन प्लेटफॉर्म तक पहुंच उपलब्ध करवाना तथा ब्रांडिंग और पैकेजिंग संबंधी संस्थागत मार्गदर्शन प्रदान करना आवश्यक है।

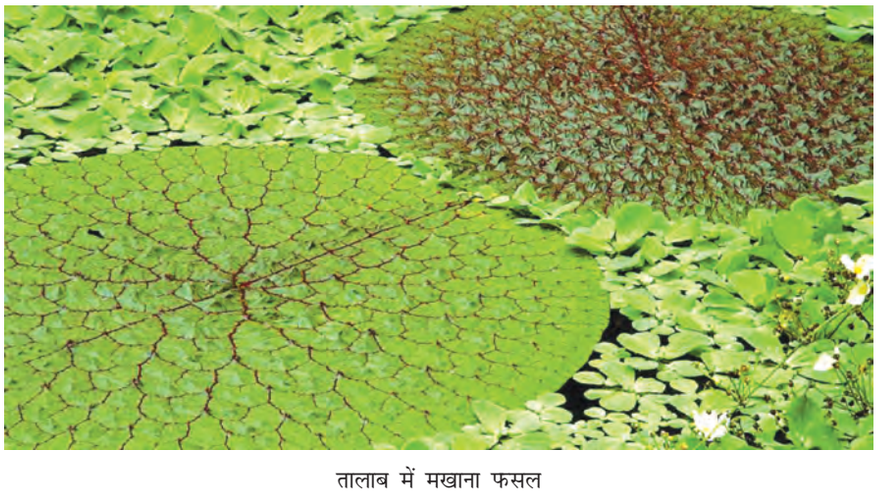

तालाब में मखाना फसल

राज्य स्तर पर गुणवत्ता प्रमाणन, भंडारण अवसंरचना और परिवहन सुविधाओं का विकास भी आय की स्थिरता और बाजार प्रतिस्पर्धा को मजबूत कर सकता है। साथ ही, लक्षित सब्सिडी, कार्यशील पूंजी सहायता और निर्यात प्रोत्साहन योजनाएं महिला नेतृत्व वाले मखाना उद्यमों को अधिक सक्षम और प्रतिस्पर्धी बना सकती हैं।

इस प्रकार उत्पादन से लेकर बाजार तक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाकर महिलाओं की भूमिका को सीमांत श्रमिक से आगे बढ़ाकर उद्यमी नेतृत्व के रूप में विकसित किया जा सकता है, जो ग्रामीण आर्थिक सशक्तिकरण और सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

बिहार में महिला स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है। ये समूह अब केवल माइक्रोफाइनेंस तक सीमित न रहकर उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन आधारित उद्यमिता, विशेषकर मखाना क्षेत्र में सशक्त भूमिका निभा रहे हैं। वित्तीय समावेशन, सामूहिक निर्णय निर्माण और कौशल विकास के माध्यम से महिलाओं की आय, बाजार सहभागिता और आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है।

हालांकि अवसंरचना, पर्याप्त ऋण, गुणवत्ता मानकीकरण और सामाजिक समावेशन जैसी चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं, लेकिन प्रभावी नीति समर्थन, संस्थागत सहयोग और सामूहिक विपणन रणनीतियों के माध्यम से इनका समाधान संभव है। मखाना आधारित महिला उद्यमिता न केवल आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम बन रही है, बल्कि यह सतत ग्रामीण विकास और लैंगिक समानता की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। ■